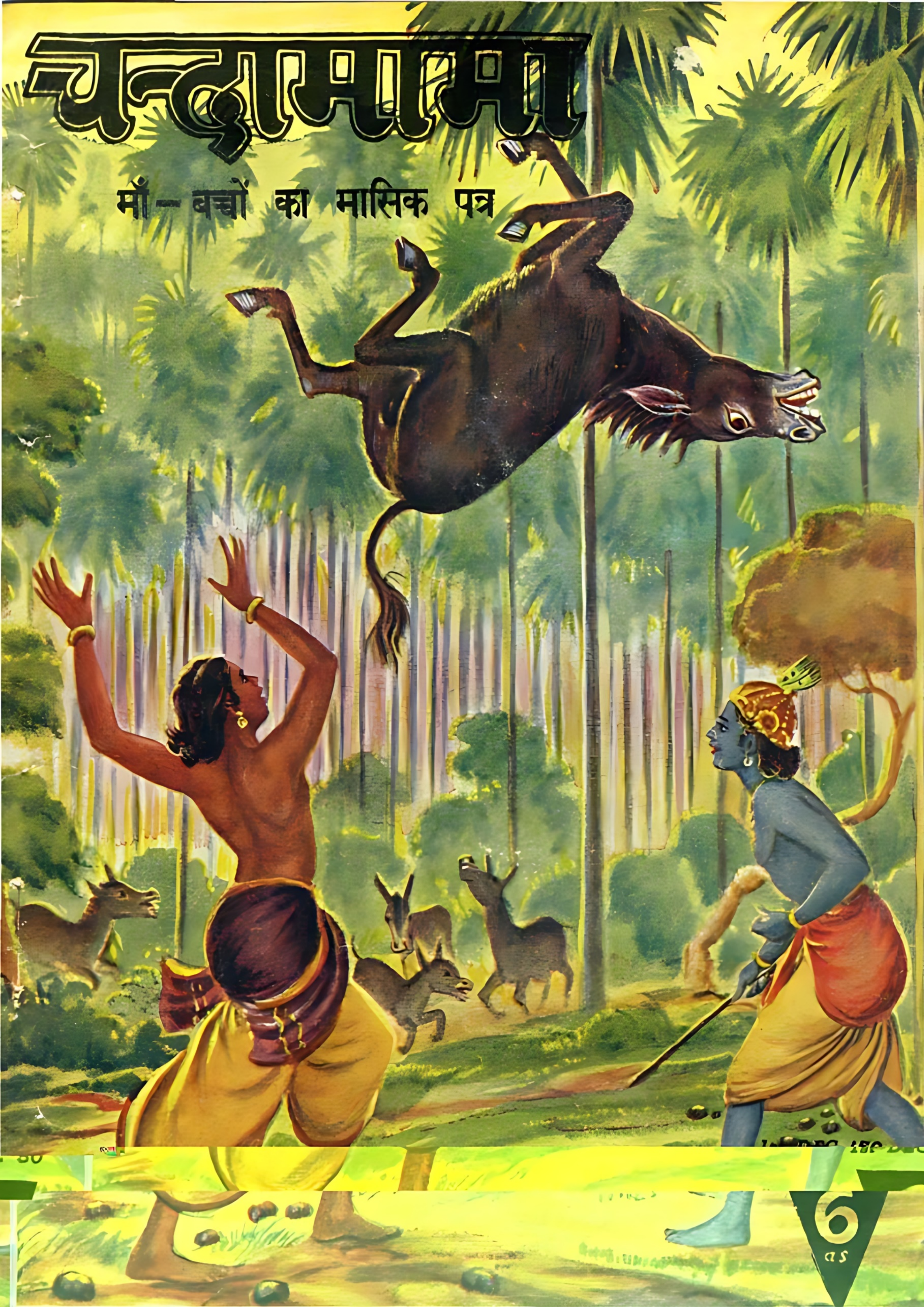

चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
6
as

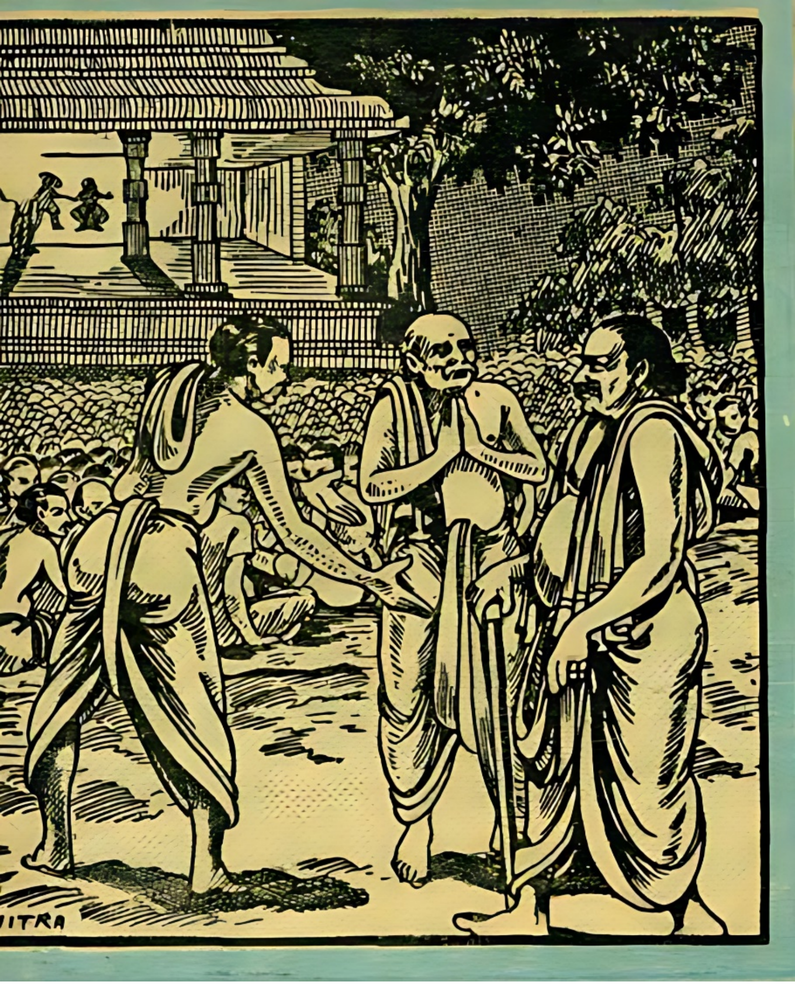


पुराने जमाने में एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव के रहने वाले सभी अहीर थे। तुम तो जानते ही हो कि अहीर लोग बड़े मेहनती होते हैं। क्या अमीर, क्या गरीब सभी मेहनत करते हैं। समय बिलकुल बर्बाद नहीं करते। सबेरे से शाम तक वे खेती-बारी का काम करने, गाय-भैंस चराने, दूध दुहने आदि में ही लगे रह जाते हैं रात के आठ बजे तक उन्हें बिलकुल फुरसत नहीं मिलती । तब खा-पीकर या तो चौपाल में या मन्दिर में या मुखिया के घर पर बड़े-बूढ़े सभी जमा हो जाते हैं।

वहाँ बैठ कर वे खेती-बारी की या गाँव के हाल-चाल की बातें करते हैं। तब तक दस - ग्यारह बज जाते हैं। सब लोग उठ कर अपने अपने घर चले जाते और निश्चिन्त होकर सो जाते हैं। फिर सवेरे पौ फटने के पहले ही उठ कर अपने अपने काम में लग जाते हैं। इस तरह उस गाँव के अहीर सब भाई भाई की तरह आपस में मिल-जुल कर रहते थे। कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं करते थे। कभी पर्व-त्यौहार आ जाता तो वे रामायण या कथा बँचवाते और सब मिल कर कथा वाचक का सत्कार करते ।

एक साल गाँव के बड़े-बूढ़ों ने जमा होकर सोचा कि इस साल कौन सा तमाशा कराया जाए ? बहुत सोच-विचार कर आखिर सबने कठपुतलियों का नाच कराने और कथा बँचवाते का निश्चय किया। उस रात को सात बजते बजते सब लोग मन्दिर के पास जमा हो गये। इतने लोग आये कि जगह बिलकुल नहीं रही।

सोमचन्द्र



कठपुतलियों का नाच शुरू करते करते दस बज गये। नाच देख कर सब लोग फूले नहीं समाए । पुतलियों को नाचते देख कर हँसते हँसते लोगों के पेट में बल पड़ गए। आखिर बूढ़े अहीरों ने खुशी के मारे मूँछों पर ताव देते हुए कहा कि अब कठपुतलियों का नाच बन्द करके कथा बँचवाना चाहिए। तब कत्थक उठ कर राग आलापते हुए कथा बाँचने लगा।

लेकिन इतने में वहाँ रामभजन महतो आ गए। रामभजन महतो क्या मामूली आदमी थे? नहीं, वे बहुत अमीर थे। गाँव के बहुत से लोग उनके कर्जदार थे। उनकी कृपा के बिना बहुतों के घर चूल्हे भी नहीं जलते। रामभजन महतो ने आते हुए कहा- "जरा देर हो गई। काम कुछ ऐसा आ पड़ा कि जल्दी नहीं आ सका।"

"कोई बात नहीं, आइए ! आइए !" करते हुए कुछ लोगों ने उन्हें सब से आगे की पंक्ति में ले जाकर बिठा दिया । पुतलियों का नाच सब को पसन्द आया था। भला रामभजन महतो उस को देखे बिना कैसे रह सकते थे ! इसलिए उनके लिए फिर कठपुतलियाँ नचाई गईं। उस के बाद कथावाचक ने फिर कथा बाँचना शुरू किया।

इतने में माधव महतो आ गए। माधव महतो उस गाँव के वैद्य थे। उनकी दवइयाँ ही जमदूतों को उस गाँव में पैर नहीं रखने देती थीं। ऐसी हालत में अगर माधव महतो की खातिर न हुई और कहीं उन्हें गुम्सा आ गया तो !

"मरीजों को देख कर आते आते देरी हो गई। क्या करूँ ? बिलकुल फुरसत नहीं

मिलती। किसको निराश करूँ ?" महतो ने बड़े अफसोस के साथ कहा।

लेकिन कुछ लोगों ने बड़े सम्मान के साथ उन्हें ले जाकर आगे की पंक्ति में बैठा दिया। "हाँ, फिर कठपुतलियाँ नचाना शुरू करो।" कुछ लोगों ने कहा। फिर पुतलियाँ नचाई गईं। लोग खूब हँसने लगे । थोड़ी देर बाद फिर कथा वाचक ने कथा बाँचना शुरू किया।

लेकिन इतने में लोगों में जोर की काना- फूसी होने लगी कि धनीराम महतो आ रहे हैं।

धनीराम महतो उस गाँव के मुखिया थे। बहुत बूढ़े और बड़े होशियार आदमी थे। गाँव के बच्चे-बूढ़े सभी उनकी आज्ञा का पालन करते। कुछ लोगों ने उठ कर उनकी अगवानी की। कथा रुक गई। लोग और भी जोर से कानाफूसी करने लगे।

धनीराम महतो ने बड़े दुख के साथ कहा - "हाय ! कथा शुरू हो गई क्या ? कितनी देर हुई शुरू किए ?" उन्होंने मुँह लटका कर पूछा।



"कथा तो शुरू हो गई। लेकिन हर्ज क्या है ? फिर से शुरू करेंगे।" कुछ लोगों ने कहा और घनीराम महतो को सब के आगे ले जा कर बिठा दिया।

तब किसी ने उठ कर कहा कि फिर से पुतलियों का नाच शुरू हो - महतो भी देखेंगे। फिर पुतलियाँ नचाई गई।

आखिर थोड़ी देर बाद कथा वाचक ने फिर राग आलाप कर कथा बाँचना शुरू किया।

इतने में पटवारी जी आ गए। अब भला, वे लोग क्या करते ? पटवारी को नाखुश करके उस गाँव में रहना क्या था; जल में रह कर मगर से बैर मोल लेना था। इसलिए कथा रोक दी गई। कुछ लोगों ने उठ कर पटवारी जी का स्वागत किया और उन्हें भी आगे ले जाकर बैठा दिया। बड़ों के कहने से फिर पुतलियों का नाच शुरू हुआ।

तब तक लोग पुतलियों का नाच देख देख कर ऊब गए थे। किसी का ध्यान उनकी ओर न था । बहुत से लोग आपस में गप-शप कर रहे थे और एक दूसरे की ओर इशारा करके मजाक उड़ा रहे थे। कुछ लोग जम्हाइयाँ ले रहे थे, कुछ लोग ऊँघ रहे थे और कुछ लोग जमीन पर पड़े पड़े खर्राटे ले रहे थे। रात भी बहुत बीत गई थी।

इस तरह कथा शुरू करते ही कोई न कोई आ जाता। लोग उसे खातिर के साथ ले जाकर आगे बैठा देते और उसके लिए फिर पहले से सब कुछ दुहराया जाता । रात भर यही हाल रहा।

आखिर रात बीत चली। मुर्गा बोलने लगा। अहीर लोग सब उठ कर अपने अपने कामों पर चले गए। रात भर कथा शुरू ही होती रही। वे बेचारे क्या करते ? कथा शुरू होते ही कोई न कोई महतो आ जाते। कोई न कोई कहता कि पुतलियाँ फिर से नचाओ। इस तरह रात भर कोई न कोई आते ही रहे और सवेरे तक कथा शुरू ही होती रही। बच्चो! इससे मालूम होता है कि जो लोग दुनियाँ में सबको खुश करना चाहते हैं उनकी अन्त में यही हालत होती है।





जब धीरसिंह ने अन्धों के बारे में पूछा तो बूढ़े ने यों कहना शुरू किया- "उन्हें अन्धे नहीं, सच पूछा जाए तो अन्धी कहना चाहिए। वे तीन बहनें हैं। तीनों अन्धी हैं। उनके आँखें हैं ही नहीं। लेकिन हरेक के माथे पर ठीक बीचों-बीच एक सूराख है। तीनों के लिए एक ही आँख है। तीनों बारी बारी से उसी एक आँख को अपने अपने माथे के सुराख में रख कर देखा करती हैं। फिर भी उससे देखने वाली की नजर मामूली आँख वालों से हजारों गुना पैनी होती है। हरेक को उस आँख से दो मिनट तक देखने का हक रहता है। इसलिए तीनों बारी बारी से दो दो मिनट तक उस आँख का उपयोग करती हैं।

अगर उनमें से कोई दो मिनट से ज्यादा उस आँख को अपने पास रख ले तो दूसरी झगड़ने लगती है। उस आँख के बिना तीनों एक मिनट भी नहीं रह सकतीं। अब तुम्हें उस आँख को ले लेना हो तो कैसे लोगे ?" बूढ़े ने पूछा।

"अच्छा तो, वे रहती कहाँ हैं ?" धीरसिंह ने कहा।

"वे सूरज या चाँद की रोशनी में बाहर नहीं आ सकतीं। इसलिए साँझ के झुटपुट में वे थोड़ी देर के लिए बाहर आ जाती हैं। जो कोई दिखाई देता है उसे खाकर तुरन्त गायब हो जाती हैं।" बूढ़े ने जवाब दिया। यों बातें करते करते सूरज डूबने लगा। अन्धेरा छाने लगा। दोनों एक बड़े मैदान में



जा पहुँचे। वहाँ छोटी छोटी कँटीली झाड़ियों के अलावा और कुछ न था ! "देखो, वे तीनों बुढ़ियाँ यहीं आती हैं। इसलिए अब हमें बड़ी सावधानी से काम लेना है।" बूढ़ा बोल ही रहा था कि कहीं से पैरों की आहट आई। दोनों झाड़ियों की आड़ में छिप गए। तीनों अन्धी बहनें वहाँ आ गईं। तीनों बहुत बूढ़ी थीं। उस समय बीच वाली बुढ़िया आँख लगाए थी। झट तीसरी बुढ़िया ने कहा- "बहन ! दो मिनट तो हो गए। अब मेरी बारी है ?"

"क्या मैं जानती नहीं कि मेरे बाद तुम्हारी बारी है ? लेकिन जरा ठहरो तो ! मुझे मानुस की महक आती है। मालूम होता है कि उन झाड़ियों की आड़ में कोई छिपा है। जरा देखने तो दो ?" बीच वाली बुढ़िया ने कहा।

"वाह ! हमेशा तुम्हीं देखा करोगी क्या ? क्या मैं नहीं देख सकती कि झाड़ी में कौन छिपा है ? ला, बारी मेरी है; आँख मुझे दे दे ! मैं देख कर बता दूँगी कि वह कौन है ?" तीसरी बुढ़िया ने कहा।

यह झगड़ा खतम होते होते तीसरी की बारी भी बीत गई। अब पहली की बारी थी। इसलिए उसने कहा- "तुम दोनों फजूल क्यों झगड़ती हो ! लाओ, आँख मुझे दे दो ! अब मेरी बारी है।"

यह सुन कर बीच वाली को गुस्सा आ गया। उसने आँख निकाल कर हथेली पर रख ली और कहा-"अब झगड़ा क्यों ? आँख मेरी हथेली पर है। तुम दोनों में जो चाहो उसे ले लो!" यह कह कर वह वहाँ

बैठ गई। अब तीनों अन्धीं थीं। आँख बीच बाली के हाथ में थी। लेकिन बाकी दोनों को दिखाई नहीं पड़ता था कि हथेली कहाँ है ? इसलिए वे इधर-उधर टटोलने लगीं। तब बूढ़े ने धीरसिंह के कान में कहा- "यही मौका है ! दौड़ जाओ और आँख को उठा लाओ !"

धीरसिंह दौड़ कर चुपचाप आँख उठा लाया और बूढ़े के हाथ में रख दी। हथेली से आँख के उठते ही बीच वाली अन्धी ने समझा कि दोनों बहनों में से किसी ने उठाई है। दोनों आपस में झगड़ने लगीं। हरेक कहने लगी कि आँख मेरे पास नहीं है। बस, अब उनको एक दूसरे पर शक हो गया। हरेक बुढ़िया यही कहती थी कि आँख किसी ने छिपा ली है। तीनों जोर जोर से चिल्लाने लगीं। बूढ़े को उन पर तरस आ गया। पास जाकर उसने कहा- "पागल औरतो ! क्यों बेकार झगड़ती हो ! आँख तो मेरे पास है। मेरा तुम से एक काम

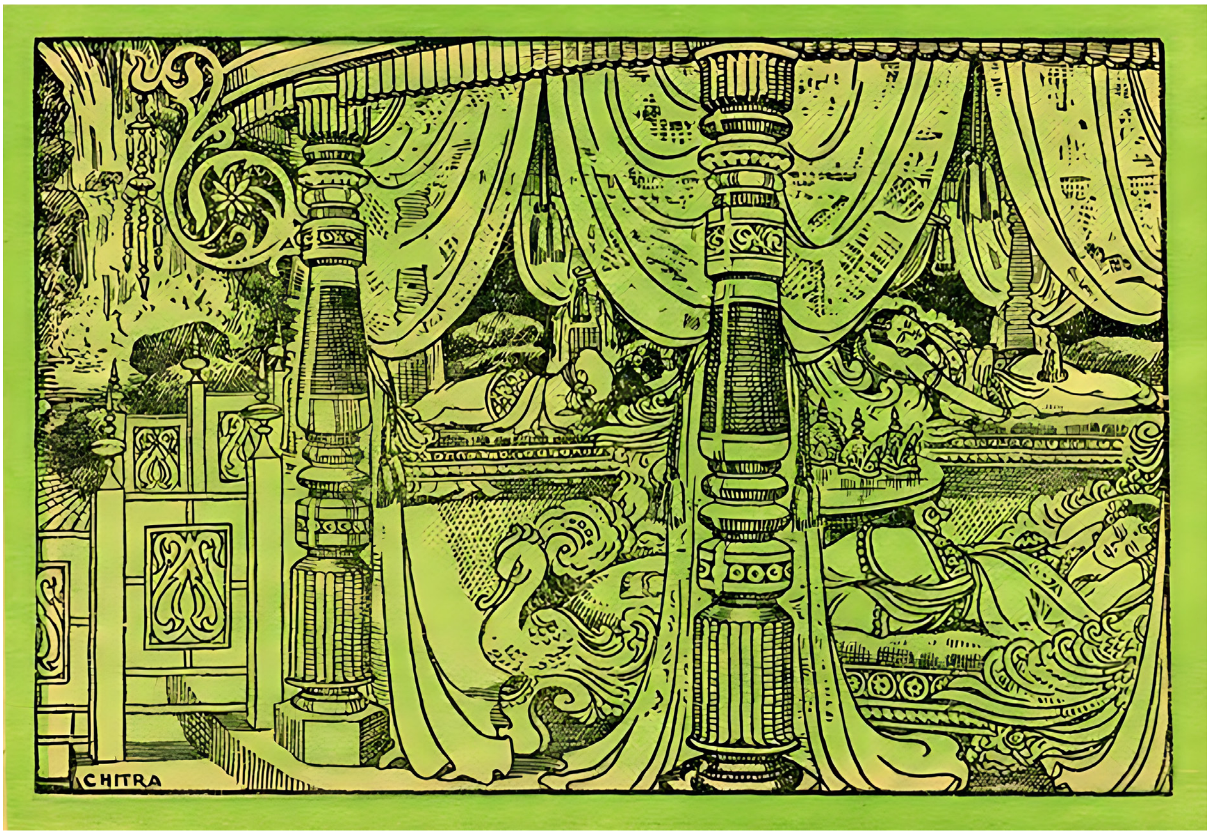


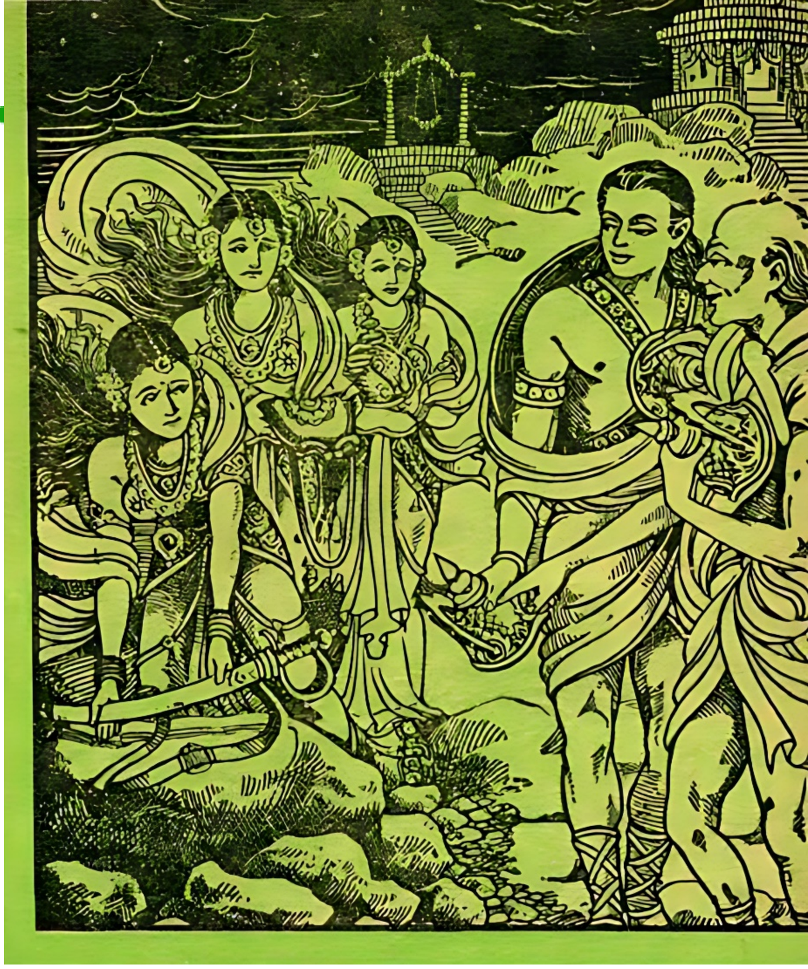
है। इसीलिए मैंने आँख उठा ली। सुनता हूँ कि यहीं नजदीक ही एक तीन सिर वाला राक्षस रहता है। जब तक तुम मुझे उसके पास जाने की राह नहीं बताओगी, तब तक यह आँख तुम लोगों को नहीं दूँगा।"

"कौन हो जी तुम ? बड़े ढीठ मालूम होते हो ? आँख चुरा कर चले हो उलटे हमें ही धमकाने ? हम किसी तीन सिर वाले राक्षस को नहीं जानतीं। हमारी आँख हमें लौटा दो और अपनी राह जाओ!" उन बूढ़ियों ने कहा।

"मेरे साथ यह चालाकी नहीं चल सकती। तुम को मालूम है कि वह राक्षस कहाँ रहता है। अगर तुम यों ही बातें बनाती रहोगी और उसका पता नहीं बताओगी, तो देखना – आँख लेकर मैं यहाँ से चल दूँगा !" बूढ़े ने धमकाया।

वाह ! यह कैसी जबर्दस्ती है ? राक्षस का पता अगर हमें मालूम होता तो बता न देतीं ? हमें डराने-धमकाने से क्या फायदा ?" पहली बूढ़ी ने कहा।





"इसे धमकाने दो न ? देखें, हमारी आँख यह कैसे उठा ले जाता है ?" दूसरी बुढ़िया ने कहा।

लेकिन बूढ़ा जब चुपचाप आँख लेकर वहाँ से चल पड़ा तब वे हार कर बोलीं- "यहाँ से दक्खिन की ओर जाओ; कुछ दूर जाने पर तुम्हें एक बड़ा तालाब मिलेगा। उससे थोड़ी दूर पर एक महल में तीन देव-कन्याएँ रहती हैं। रात होते ही वे इन्द्र-लोक से उतरती हैं और उस तालाब में किलोलें करके नहाती हैं। रात भर उस महल में आराम करके सबेरा होने के पहले फिर अपने लोक को लौट जाती हैं। तीन चीजें उन देव-कन्याओं के पास हैं। राक्षस को मारने के लिए तुम्हें वे तीनों चीजें चाहिए। एक तो मन्त्र-मुकुट, दूसरी टेढ़ी तलवार और तीसरी जादू की थैली। वे सोते वक्त अपने मुकुट उतार कर खूँटी पर टाँग देती हैं। मुकुट पहने बिना वे देव-लोक नहीं पहुँच सकतीं। इसलिए अगर तुम किसी तरह उनके मुकुट चुरा लो तो वे तुम्हें सब कुछ देने को तैयार हो जाएँगी। उन्हीं की कृपा से तुम राक्षस को मार सकोगे।" बूढ़ियों ने कहा।

"अच्छा, तो मैं तुम्हारी आँख पैरों के पास रख देता हूँ। ढूँढ़ लो !" यह कह कर बूढ़े ने आँख वहाँ रख दी। तुरंत वे दोनों वहाँ से उड़ चले। अगर इसके पहले ही आँख बूढ़ियों के हाथ लग जाती तो उनकी खैर न थी।

बूढ़ियों की बताई हुई राह पर चल कर थोड़ी देर में वे एक तालाब के पास पहुँचे।



उसकी बगल में ही सङ्गमरमर का बना हुआ एक महल दिखाई दिया। उस महल में तीन सफेद पलङ्गों पर तीनों देव-कन्याएँ गाढ़ी नींद में पड़ी थीं। रात ज्यादा न थी। थोड़ी ही देर में पौ फटती और तीनों उठ कर अपने लोक को चली जातीं। देर करने से सारा मामला बिगड़ जाता। दीवार पर मुकुट चमक रहे थे। बूढ़े ने उनकी तरफ इशारा किया। धीरसिंह दबे पाँव गया और चुपके से मुकुट उठा लाया। अब देव-कन्याओं के चले जाने का कोई डर तो था नहीं ! बस, दोनों तालाब के किनारे जाकर मौज से चिल्ला-चिल्ला कर गाने लगे। इस हो-हल्ले से देव-कन्याओं की नींद उचट गई और वे हड़बड़ा कर मुकुट लेने दौड़ीं। लेकिन वहाँ मुकुट कहाँ ? व्याकुल होकर इधर-उधर खोजने लगीं। इतने में उन्हें तालाब किनारे मौज से गाते हुए दो आदमी दिखाई दिए । मुकुट उनके हाथ में थे। यह देख कर उनको बहुत क्रोध आया। वे लपक कर उनके पास गईं। लेकिन ये दोनों उनसे क्या कम थे ? उन्हें खूब नजदीक आने दिया और पलक झपकते आसमान में उड़ कर मुकुट दिखा दिखा कर उन्हें खूब चिढ़ाने लगे। बेचारी परेशान हो गईं। मुकुट हाथ में आए बिना वे कुछ नहीं कर सकती थीं। इसलिए रोने-कलपने लगी- "हमारे मुकुट हमें दे दो!"

तब बूढ़े ने उनसे कहा -"अच्छा, मुकुट हम तुम्हें लौटा देंगे। लेकिन इसके बदले तीन चीजें देनी पड़ेंगी। जब तक तुम हमें वे चीजें नहीं दोगी, मुकुट भी नहीं मिलेंगे।"

"अच्छा, बोलो तुम क्या चाहते हो ?" देव -कन्याओं ने पूछा।

तब बूढ़े ने अन्धी बूढ़ियों की बताई हुई तीनों चीजें माँगीं। लाचार होकर पहली देव-कन्या ने थैली ला दी । वह मृगचर्म की बनी हुई थी और उस पर सोने का काम किया हुआ था। दूसरी जाकर एक तलवार ले आई। वह बड़ी तेज थी और चमचम कर रही थी। तीसरी ने लोहे का बना हुआ एक मुकुट ला दिया। तीनों चीजें बूढ़े के हाथ में देकर देव-कन्याओं ने कहा "लो, अपनी चीजें ! अब हमारे मुकुट हमें दे दो!"

तब बूढ़े ने वे तीनों चीजें ले लीं और उनके मुकुट उन्हें दे दिए। फिर वे वहाँ से उड़ चले। देव-कन्याएँ भी अपने अपने मुकुट पहन कर मन ही मन भगवान को धन्यवाद देती वहाँ से चली गईं। क्योंकि वे मुकुट उन्हें फिर न मिलते तो उनको कभी इन्द्रलोक जाना नसीब न होता ।

थोड़ी देर में सबेरा हो गया। वह बूढ़ा और धीरसिंह दोनों नीचे उतर कर एक जगह बैठ गए और आराम करने लगे। धीर सिंह ने घर से चलने के बाद अब तक कुछ खाया पिया न



था। उसे बड़े जोर की भूख लग रही थी। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई । लेकिन कहीं कुछ खाने लायक चीज़ न दिखाई दी। तब उसने बूढ़े से पूछा कि भूख मिटाने का कोई उपाय बताओ।

यह सुनते ही बूढ़ा ठठा कर हँसने लगा। तब धीरसिंह को बहुत गुम्सा आया । "भूख से मेरा दम निकला जा रहा है और तुम्हें हँसी सूझती है ? शायद तुम्हें भूख नहीं लगती होगी! पंख वाले जूतों की ही तरह तुमने भूख मिटाने का भी कोई उपाय ढूँढ लिया होगा !" उसने कहा।

"अरे भई ! मैं इसलिए नहीं हँसता हूँ। हमने इतनी मेहनत करके जो तीन चीजें कमाईं हैं क्या उनका कोई उपयोग नहीं है? तुम्हें बिना समझे-बूझे भूख से चिल्लाते देख कर मुझे हँसी आ गई। देखो, यह थैली जब तक हमारे पास रहेगी तब तक हमें दुनियाँ में किसी चीज़ की कमी न होगी ! लो !" यह कह कर बूढ़े ने वह थैली नीचे उलटी। तुरन्त उसमें से तरह तरह की खाने की चीजें निकल पड़ीं। धीरसिंह ने खूब खाया। बूढ़े ने देव-कन्या की दी हुई तलवार उसके हाथ में दे दी और पुरानी तलवार फेंकवा दी। फिर उसने मन्त्र-मुकुट देते हुए कहा- "लो, इसे पहन लो ! देखो, क्या तमाशा होता है ?" यह कह कर उसने मुकुट उसे पहना दिया। तुरन्त धीरसिंह आँखों से ओझल हो गया। बूढ़े को सिर्फ हवा में लटका हुआ मुकुट दिखाई देने लगा। "अरे! तुम कहाँ चले गए!" बूढ़े ने पुकारा। "यहीं तुम्हारी बगल में तो हूँ।" धीरसिंह ने जवाब दिया।

"क्या मैं तुम्हें दिखाई देता हूँ ?" बूढ़े ने धीरसिंह से पूछा।

"क्यों न दिखाई दोगे ? क्या मैं तुम्हें दिखाई नहीं देता ?" धीरसिंह ने अचरज के साथ पूछा।

तब बूढ़े ने कहा- "नहीं! मुझे सिर्फ़ तुम्हारे सिर का मुकुट दिखाई देता है । जब तुम राक्षस से लड़ने जाओगे तो इसी तरह तुम तो उसे देख सकोगे; लेकिन वह तुम्हें नहीं देख पाएगा। देख ली न इन चीजों की करामात ?" इस तरह मन बहलाने की बातें करते हुए दोनों फिर वहाँ से आगे बढ़ चले। [सशेष]





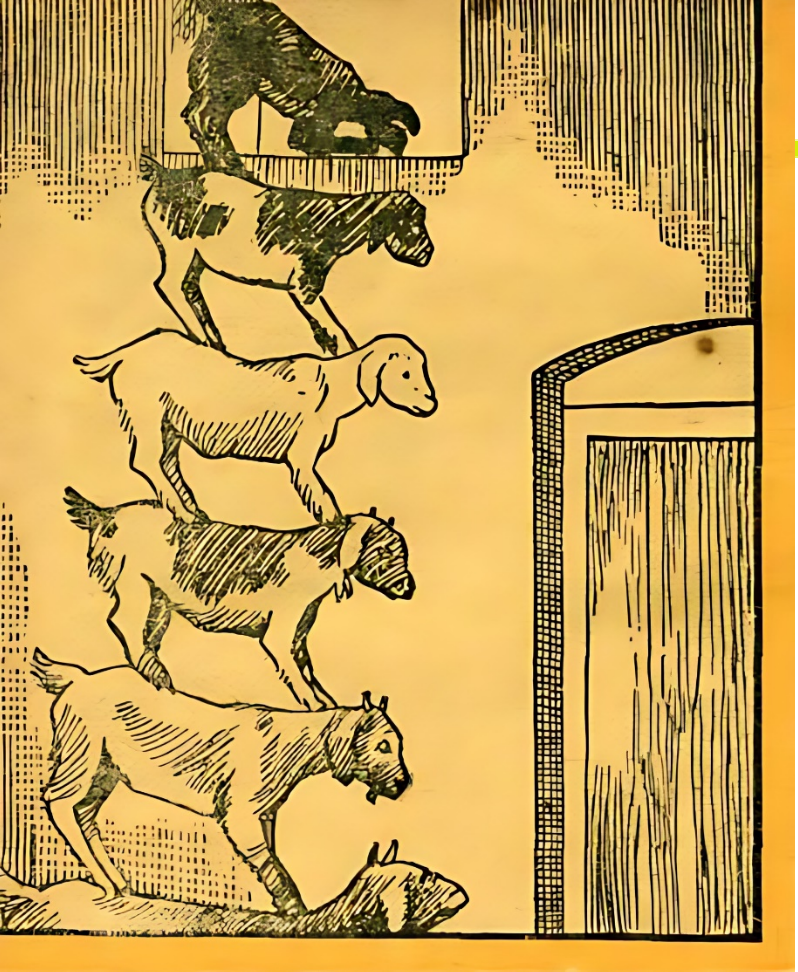
एक गाँव था। उस गाँव में एक बकरी थी और उस बकरी के छः बच्चे थे। वे छहों देखने में बहुत सुन्दर थे। उनकी उछल-कूद देख कर सबको खुशी होती थी। बकरी अपने बच्चों को बहुत प्यार करती थी। रोज़ वह गाँव के नजदीक के एक जङ्गल में जाकर उनके लिए चारा ले आती थी।

एक दिन उस बकरी को जङ्गल में एक भेड़िए ने देख लिया। वह भेड़िया उस के पीछे पीछे आया और उसके घर का पता जान कर चला गया।

बकरी के बच्चों का सबसे बड़ा दुश्मन तो भेड़िया ही होता है ? इसलिए पहले ही से बकरी ने अपने बच्चों को चेता दिया था कि उसकी गैरहाजिरी में घर का दरवाजा खुला न रखा जाए। उसने अपने बच्चों को बाहर जाकर घूमने-फिरने से भी मना कर दिया था। उसने यह भी साफ-साफ कह दिया था कि भेड़िए आकर दरवाजा खटखटाएँगे। इसलिए बिना जाने-बूझे दरवाजा नहीं खोलना चाहिए । इतने में बकरी के सबसे छोटे बच्चे के मन में एक सन्देह पैदा हुआ। उसने पूछा-"हमें यह कैसे मालूम हो कि दरवाजा तुम खटखटा रही हो या भेड़िया ?"

तब उसकी माँ ने जवाब दिया- "तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन याद रखो — भेड़िए की आवाज भरीई हुई सी होती है। इसके अलावा उसके पैर कोयले की तरह काले होते हैं। मेरे पैर देखो - कितने सफेद हैं ?"

इस तरह उसने उन्हें बहुत देर तक समझाया। तब से बकरी के बच्चे माँ के जङ्गल जाने के बाद दरवाजा कभी खुला नहीं रखते थे। दूसरे दिन मेड़िए ने जो अब बकरी के रहने की जगह जान गया था, आकर देखा तो किवाड़ लगे हुए थे। तब उसने कहा-



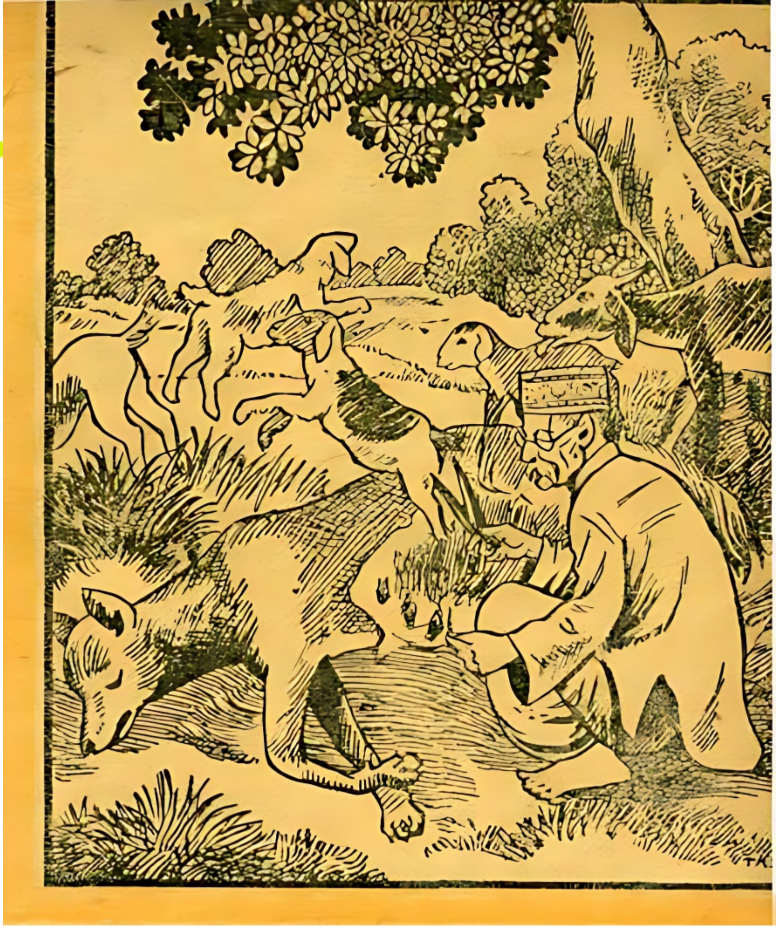
"बच्चो ! खोलो झट दरवाजा ! मैं लाई हू लड्डू, खाजा !" तुरन्त मिठाई की लालच से बकरी के पाँचों बच्चों ने दौड़ कर दरवाजा खोलना चाहा। लेकिन सबसे छोटे बच्चे ने उन्हें रोक कर कहा-"जरा गौर करो! इसका गला भर्राया हुआ सा मालूम होता है। यह तो भेड़िया है !" तब बाकी बच्चों ने भेड़िए की चाल जान ली और कहा- "दुष्ट भेड़िए ! जा ! तू जा! नहीं खुलेगा दरवाजा!" तब भेड़िए ने समझ लिया कि बकरी के बच्चों को उसके भर्राए हुए गले की बात मालूम हो गई है। इसलिए उसने बनिए के पास जाकर थोड़ी काली मिर्च ले ली; ग्वाले के पास जाकर थोड़ा सा दूध माँग लिया। फिर दूध में काली मिर्च की बुकनी मिला कर पी गई। तब उसके गले की भर्राहट दूर हो गई। उसने फिर बकरी के घर के पास जाकर कहा- "बच्चो ! खोलो झट दरवाजा ! मैं लाई हूँ लड्डू खाजा !" अब उसका गला मीठा था। इसलिए बकरी के पाँच बच्चों ने इस बार पूरा विश्वास कर लिया कि उनकी माँ ही दरवाजा खोलने को कह रही है। वे झट दौड़ पड़े। लेकिन फिर छोटे बच्चे ने उन्हें रोक कर कहा-"ठहरो! हो सकता है कि यह भेड़िए की ही कोई नई चाल हो। इसलिए देख लेना चाहिए कि उसके पाँव उजले हैं कि नहीं ?" तब बकरी के बच्चे एक दूसरे की पीठ पर इस तरह खड़े हो गए कि सबसे छोटा बच्चा खिड़की की सतह तक पहुँचा। उसने बाहर झाँक कर देखा तो भेड़िए के पाँव कोयले से काले थे। उसने कहा- "अरे, इसके पाँव तो उजले नहीं हैं! यह तो भेड़िया है।" तब सब ने फिर भेड़िए का भेद जान लिया और दरवाजा नहीं खोला।

तब भेड़िया मन ही मन खूब बिगड़ता हुआ गाँव में एक बुढ़िया के पास गया और थोड़ा सा आटा माँग लिया। उसने आटा अपने पैरों

में चिपटा लिया। उसने सोचा कि इस बार बकरी के बच्चे उसे पहचान न पाएँगे। हुआ भी ऐसा ही। इस बार खिडकी से झाँकने पर छोटे बच्चे ने देखा कि पाँव भी उजले हैं। उसने कहा-"यह जरूर हमारी माँ है।"

तब बच्चों ने मिठाई की लालच से तुरन्त दौड़ कर दरवाजा खोल दिया। अब क्या था ? भेड़िया अन्दर झपटा। उसे देखते ही बच्चे सभी कोने में दुबक गए। लेकिन भेड़िए ने खोज ढूँढ़ कर एक एक को निगल लिया। लेकिन सबसे छोटा बच्चा पलङ्ग के नीचे जाकर छिप गया था। इसलिए भेड़िया उसे नहीं निगल सका । पाँच बच्चों को निगलने के कारण भेड़िए का पेट फूल गया। वह ज्यादा दूर न चल सका और नजदीक ही एक पेड़ की छाँह में जाकर लेट गया।

थोड़ी देर बाद बकरी ने घर आकर देखा तो सारा घर सूना पड़ा था। उसने जोर से पुकारा । तब कहीं छोटा बच्चा पलङ्ग के नीचे से बाहर आया। उसने अपनी माँ को सारी कहानी कह सुनाई। तब दोनों भेड़िए को ढूँढने चले। थोड़ी ही दूर पर उन्हें भेड़िया पेड़ की छाँह में



आराम से खर्राटे लेता दिखाई दिया। तुरन्त बकरी गाँव में जाकर एक जान-पहचान के दर्जी को बुला लाई । दर्जी ने एक बड़ी कैंची से भेड़िए का पेट कतर डाला। तुरन्त बकरी के पाँचों बच्चे एक एक करके उछलते हुए बाहर आ गए। तब दर्जी ने बहुत से कङ्कड़-पत्थर चुन कर भेड़िए के पेट में ठूँस दिए और उसे पहले की तरह सी दिया।

थोड़ी देर बाद जब भेड़िए की नींद टूट गई तो उसे बड़े जोर की प्यास लगी। वह पानी पीने के लिए एक नदी के किनारे गया। लेकिन पेट में पत्थर भरे होने के कारण वह आगे को झुक गया और नदी में गिर कर डूब गया ।



एक समय विदर्भ देश पर शूरसिंह नाम का एक राजा राज करता था। उसकी एक लड़की थी जिसका नाम कनक-प्रभा था । जब वह सयानी हो गई तो राजा ने उसका ब्याह कर देना चाहा। लेकिन उसने कहा-"जो हेम-द्वीप जाकर वहाँ की खबरें मुझे लाकर सुनाएगा मैं उसी से ब्याह करूँगी। यह मेरा प्रण है।"

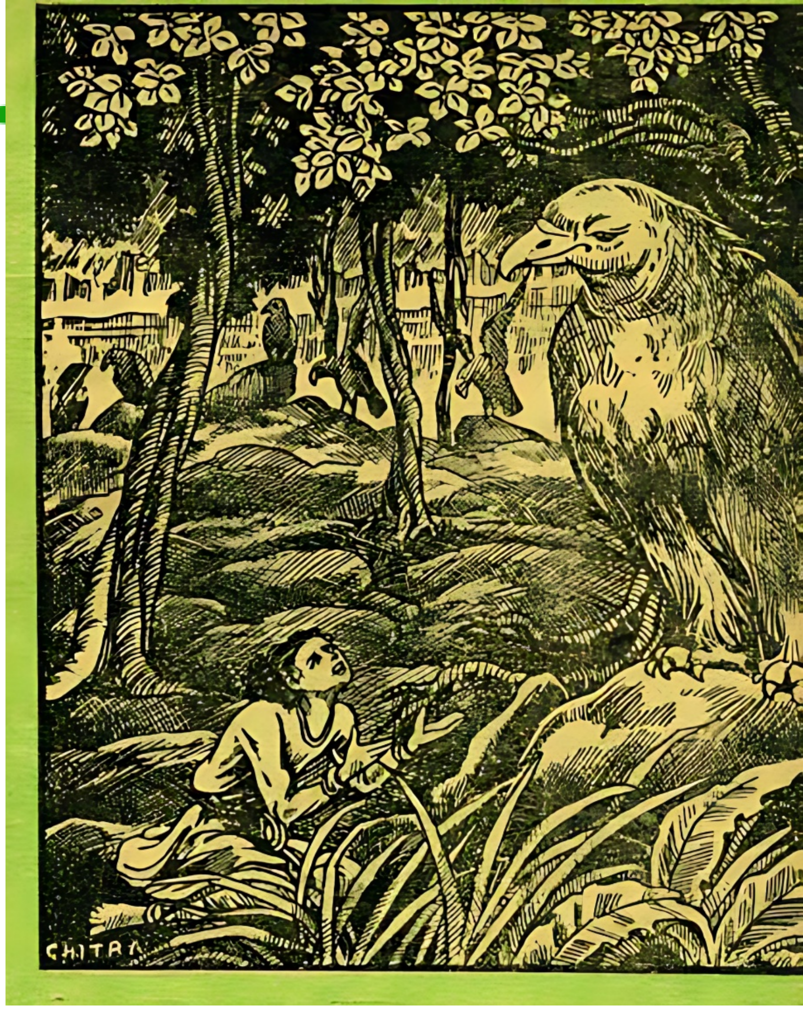
उसका यह प्रण सुन कर माँ-बाप को बहुत अचरज हुआ। लेकिन वे इस जिद्दी लड़की के बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने उसके प्रण का ढिँढोरा सभी देशों में पिटवा दिया।

अब इस हेम-द्वीप का मार्ग बहुत कम लोग जानते थे। वहाँ जाकर सही-सलामत लौट आना तो लगभग नामुमकिन ही था। इसलिए बहुत दिनों तक उस राजकुमारी से कोई ब्याह करने नहीं आया। लेकिन कुछ दिन बाद विष्णु-वर्धन नामक एक राजकुमार ने राजा के पास आकर कहा- "मैं देश- विदेश घूम कर आ रहा हूँ। मैंने हेम-द्वीप भी देखा है।" तब राजा ने राजकुमारी से उसकी मुलाकात करा दी। राजकुमारी ने उससे हेम-द्वीप के बारे में कुछ सवाल पूछे। लेकिन वह राजकुमार उन सवालों का जवाब नहीं दे सका। उसने लाज से सिर नीचे झुका लिया। क्योंकि वास्तव में उसने हेम-द्वीप नहीं देखा था। तब राजा ने क्रोधित होकर उसे अपने दरबार से निकलवा दिया। इस तरह अपमानित होकर राजकुमार ने मन में निश्चय कर लिया कि चाहे जैसे भी हो, हेम-द्वीप की यात्रा करनी ही चाहिए। इसलिए वह अनेकों घने जङ्गल पार कर समुन्दर के किनारे पहुँचा और वहाँ एक जहाज पर चढ़ कर रवाना हुआ। लेकिन न जाने, वह किस दुर्मुहूर्त में चला था कि राह में ही एक

गिरिधर लाल

बड़ा भारी तूफान उठा और जहाज डूब गया। जहाज में जो लोग थे, उनमें से कोई न बचा। विष्णु-वर्धन को एक बड़ी मछली ने निगल लिया।

वह मछली रत्न-द्वीप की ओर जाकर वहाँ धीवरों के जाल में फँस गई। उस मछली को धीवरों ने ले जाकर उस देश के राजा सत्यव्रत की भेंट की । राजा ने उस मछली को जब चिरवाया तो उसके पेट में से विष्णु-वर्धन बाहर निकल आया। राजा ने दाँतों तले उँगली दबाते हुए उससे पूछा-"तुम कौन हो और कहाँ के रहने वाले हो ?" तब उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई और अन्त में राजा से प्रार्थना की- "राजन् ! मुझे हेम-द्वीप की राह बता दें।" तब राजा सत्यव्रत ने कहा-"मैंने उस टापू का नाम तो सुना है। लेकिन उसकी राह नहीं जानता। फिर भी तुम एक काम करो ! परसों मैं राहु-द्वीप जाने वाला हूँ। वहाँ बहुत से ऐसे महात्मा लोग हैं जो संसार भर घूम आए हैं। वे आसानी से तुम्हारी मदद कर सकते हैं। तुम परसों तक यहीं रह कर मेरे साथ राहु-द्वीप चलो।" तीसरे दिन विष्णु-वर्धन भी उस राजा के साथ राहु-द्वीप की ओर चला। लेकिन



बीच समुन्दर में जाते ही फिर एक तूफान उठा और जहाज एक भँवर में फँस कर टुकड़े टुकड़े होकर डूब गया। जहाज का एक तख्ता विष्णु-वर्धन के हाथ लग गया जिसकी सहायता से वह किनारे पहुँचा। लेकिन सत्यव्रत उसी भँवर में डूब गया।

अब राजकुमार विष्णु-वर्धन बहुत ही दुखी होकर किनारे पर एक पेड़ की छाँह में बैठ गया । इतने में बहुत बड़े पञ्छियों का एक झुण्ड आकर उसी पेड़ के इर्द-गिर्द उतरा। राजकुमार को चिड़ियों की भाषा मालूम थी। इसलिए उन पञ्छियों की



बातचीत से उसे मालूम हो गया कि वे हेम-द्वीप की ओर ही जा रहे हैं। तुरन्त उसने एक बड़े पञ्छी से विनती की-"मुझे भी अपने साथ हेम-द्वीप ले चलो।" तब उस पञ्छी ने उस पर तरस खाकर उसे अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और हेम-द्वीप के एक बगीचे में उसे ले जाकर उतार दिया।

वह बगीचा उस द्वीप की रानी का था। थोड़ी देर में दासियों ने उसे देख लिया और अपनी रानी के सामने ले जाकर खड़ा किया। उस रानी का नाम कनक-रेखा था। उसने बहुत चकित होकर उससे पूछा-"तुम कौन हो और इस दुर्गम द्वीप पर कैसे आ पहुँचे हो ?" तब विष्णु-वर्धन ने अपनी सारी कहानी सुनाई। उसकी बातें सुन कर रानी कनक-रेखा ने भी अपना सारा हाल उसे सुना दिया । उसने कहा- "हम तीन बहनें थीं। एक दिन मेरी दोनों बहनें एक सरोवर में किलोलें कर रहीं थीं कि उनकी छिटकाई पानी की बूँदें किनारे पर बैठ कर तप करने वाले एक महात्मा पर पड़ीं। तुरन्त उन्होंने गुस्सा होकर शाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वी पर जाकर मनुष्य रूप में जन्म लो। उस शाप के कारण मेरी दोनों बहनें मुझसे बिछुड़ गईं। वे पृथ्वी पर जाकर पैदा हुईं और मैं अकेली यहाँ रह गई।"

विष्णु-वर्धन वहाँ रहते रहते रानी से प्रेम करने लगा। रानी ने भी उससे ब्याह करना मञ्जूर कर लिया। लेकिन उसने कहा -"इसके लिए मुझे अपने पिता से पूछना होगा। मैं तीन दिन में उनके पास जाकर लौट आऊँगी। तब तक तुम मेरे इस महल में आराम से रहो। लेकिन एक बात याद रखना -"बीच वाला कमरा कभी न खोलना।" यह कह कर रानी कनक-रेखा वहाँ से चली गई।

विष्णु-वर्धन दो दिन तक उस महल में अकेला घूमता रहा। लेकिन तीसरे दिन उसके मन में कुतूहल का एक झोंका उठा और वह बीच वाला कमरा खोल कर अन्दर चला गया। वहाँ एक सफेद पलङ्ग पर एक सुन्दरी सोई हुई थी। राजकुमार ने और भी नजदीक जाकर देखा तो मालूम हुआ कि यह वही सुन्दरी कनक-प्रभा थी जिसके कारण वह इतने कष्ट उठा कर हेम-द्वीप आया था। अचरज से भर कर उसने चारों तरफ देखा तो उसे और एक पलङ्ग पर ठीक उसी शक्ल की एक दूसरी सुन्दरी दीख पड़ी। राजकुमार का अचरज और भी बढ़ गया और वह वहाँ के बगीचे में घूमने लगा।

उस बगीचे के बीचों-बीच एक सुन्दर सरोवर था। उस सरोवर के किनारे पर एक बढ़िया घोड़ा कसा हुआ खड़ा था। राजकुमार उसके पास पहुँचा और उस पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन उस घोड़े ने ऐमा पुट्ठा उछाला कि राजकुमार धड़ाम से सरोवर में जा गिरा।

पानी के तले में जाकर राजकुमार फिर ऊपर आया। ऊपर आकर

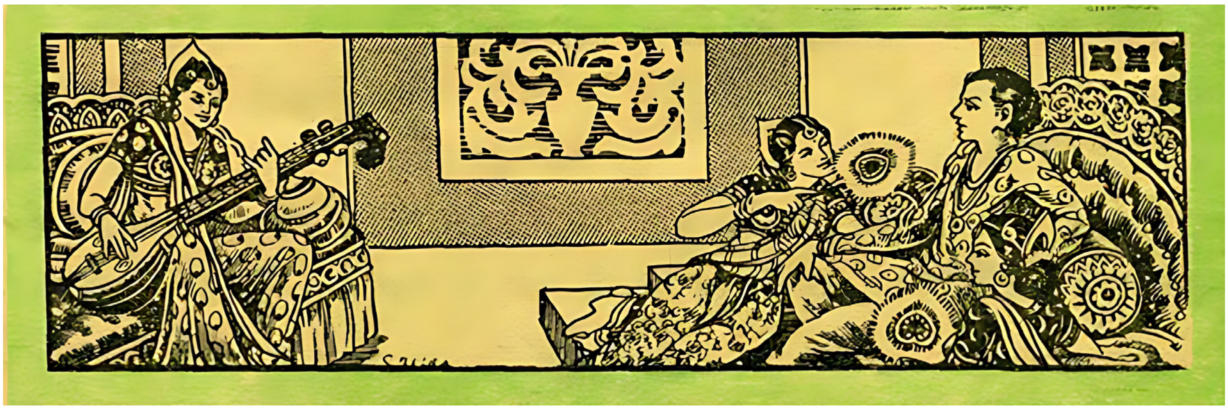


उसने देखा कि न वह सरोवर है, न महल। बगीचे का कहीं नामो-निशान भी न था। वह विदर्भ देश की मिट्टी पर खड़ा था। उसे ऐसा लगा कि जो कुछ उसने देखा-सुना सब सपना था। लेकिन जब उसने अपनी ओर देखा तो उसे मालूम हुआ कि वह हेम-द्वीप की रानी के दिए हुए जड़ाऊँ जेवर और कपड़े पहने है। फिर वह कैसे मान ले कि सब कुछ सपना था?

दूसरे दिन राजकुमार विष्णु-वर्धन ने विदर्भ देश के राजा के पास जाकर कहा- "मैं हेम-द्वीप हो आया हूँ और आपकी पुत्री के प्रश्नों का उत्तर देने आया हूँ।" लेकिन

राजा ने कहा-"अच्छी तरह सोच-विचार लो ! अगर इस बार भी पहले की तरह तुम्हारी बातें झूठी साबित हुईं तो फिर जान की खैर नहीं ! समझे ?" लेकिन राजकुमार को इस बार डरने की कोई जरूरत न थी । जब राजकुमार ने कनक-प्रभा से हेम-द्वीप का आँखों देखा वर्णन कह सुनाया तो उसने प्रसन्न होकर कहा - "हे राजकुमार ! तुम्हारी जबानी अपने पूर्व-जन्म का हाल सुनते ही मेरा शाप छूट गया । इसलिए अब मैं अपने हेम-द्वीप को लौट जाती हूँ। अगर तुम मुझसे ब्याह करना चाहते हो तो हेम-द्वीप आओ !" यह कह कर वह सबकी आँखों से ओझल हो गई। यह देख कर बेचारे राजा-रानी मूर्छित हो गए।

राजकुमार विष्णु-वर्धन वहाँ से चलता चलता कुछ दिनों में रत्न-द्वीप जा पहुँचा। वहाँ सत्यव्रत की पुत्री राजकुमारी कनक-वती ने उससे कहा – "हे राजकुमार ! मेरे स्वर्गीय पिताजी की यह इच्छा थी कि मैं तुमसे विवाह करूँ। इसलिए मैं इतने दिन से तुम्हारी राह देख रही थी। आगे तुम्हारी जो इच्छा !" तब राजकुमार ने उससे विवाह कर लिया। विवाह होते ही कनक-वती ने कहा -"तुमसे ब्याह होते ही मेरा शाप भी छूट गया। मैं हेम- द्वीप की रानी कनक- रेखा की दूसरी बहन हूँ। चलो, अब हम भी हेम-द्वीप चलें।" तब वे दोनों एक विमान पर चढ़ कर हेम-द्वीप की ओर उड़ चले। वहाँ जाकर विष्णु-वर्धन ने अपनी प्रतीक्षा में बैठी हुई कनक-रेखा और कनक-प्रभा से भी ब्याह कर लिया। इस प्रकार अपनी तीनों रानियों के साथ वह सुख-पूर्वक समय बिताने लगा।





सीतापुर में एक नाटे पण्डितजी रहा करते थे। उनकी पत्नी का नाम था सुखवन्ती। सुखवन्ती बहुत ज्यादा लम्बी तगड़ी तो न थी। लेकिन उसका पति बहुत नाटा होने के कारण उसके कन्धे तक भी न पहुँचता था। वह बेचारी सर और कमर झुका कर बुड़िया की तरह खड़ी हो जाती तो भी कुछ फायदा न होता था। इसलिए वह बहुत सोच में पड़ गई। क्योंकि उसकी समझ में पति से ज्यादा लम्बी होना पतिव्रता का लक्षण न था।

पड़ोस की रामप्यारी देवी बार-बार उसे समझाती पति से ज्यादा लम्बी होने में तुम्हारा कोई दोष नहीं। वह तो नाटा पैदा हुआ। इसमें उसका भी दोष न था। अब चिन्ता करके तुम क्या कर सकती हो?" लेकिन सुखवन्ती का तो मन नहीं मानता। वह कहती "रामप्यारी जी! अगर आप ही ऐसा कहने लगी तो मैं क्या करूँ ! आप ही ने तो आदर्श रमणियों की कहानियाँ मुझे पढ़ कर सुनाई थीं? क्या गान्धारी ने अपने पति को अन्धा देख कर अपनी आँखों पर भी पट्टी नहीं बाँध ली थी ? क्या गान्धारी इमारे रिए आदर्श नहीं है ?"

"लेकिन गान्धारी की नकल करना क्या हमारे लिए मुमकिन है?" रामप्यारी जवाब देतीं।

इस उत्तर से सुखबन्ती को सन्तोष न होता। वह कहती-"परसों आपने ही तो एक कहानी सुना कर समझाया था कि पतिब्रता स्त्रियों के छिए संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। कया सावित्री ने अपने मृत पति को यम के हाथ से छुड़ा नहीं लिया था?"

तब रामप्यारी ने कहा-"हम उनकी नकल नहीं कर सकतीं । लेकिन अभी एक बात सूझती है, मुझे । परसों मेरा बड़ा लड़का घनुआ कहीं से लोहे के दो कड़े लाया और छत से लटकाने लगा। मैंने पूछा- "यह क्या कर रहे हो ! तब उसने जवाब दिया--

बीणा देवी



"इन कड़ों को पकड़ कर लटकूँगा तो मैं और भी लम्बा हो जाऊँगा।"

इस तरह थोड़ी देर तक बातें करने के बाद रामप्यारी अपने घर चली गईं। लेकिन सुखवन्ती के मन में कड़े की बात बैठ गई। वह भी अपने पति को लम्बा बनाने के लिए कड़े की तलाश में लग गई। लेकिन बहुत खोजने पर भी उसे अपने घर में वैसे कड़े न दिखाई दिए। तब उसने दो मोटे रस्से लेकर छत से लटका दिए। उसने सोचा- रोज उन्हें पकड़ कर थोड़ी देर लटकने से नाटे पण्डित जरूर लम्बे हो जाएँगे। उन्हें रस्से पकड़ने में सुविधा हो, इसलिए उसने एक टेबुल वहाँ रख कर उस पर एक चौकी भी रख दी। शाम को नाटे पण्डित घर आए और यह तमाशा देखा तो क्रोध से भर कर बोले- "यह सब क्या है ? किसी को फाँसी देना चाहती हो क्या ?" लेकिन उस भोली-भाली पतिब्रता को यह मालूम न था कि फाँसी किस चिड़िया का नाम है। वह नहीं जानती थी कि फाँसी के लिए रस्सों की जरूरत पड़ती है। इसलिए उसने झट कह दिया-"यह सब आप ही के लिए है।"

यह जवाब सुन कर नाटे पण्डित आग-बबूला हो गए और लगे अन्धाधुन्ध छड़ी

बरसाने। रोते रोते बेचारी अपने मन की बात उन्हें समझाने की कोशिश करने लगी। लेकिन नाटे पण्डित ने उसकी एक न सुनी। सुखवन्ती बेचारी की समझ में न आया कि उसके किस कसूर के कारण आज उसके पतिदेव इतने नाराज हो गए हैं ?

नाटे पण्डित चुपचाप कमरे में जाकर मुँह फेर कर लेटे रहे। बेचारी सुखवन्ती रामप्यारी जी के घर गई। वह अपने पतिदेव से बातें कर रहीं थीं। "अजी ! क्या कलियुग में भी पहले की सी पतिव्रताएँ कहीं हैं ?" रामप्यारी जी ने अपने पतिदेव से पूछा।

"अरे भई ! कुछ न पूछो ! कलियुग में वैसी औरतें कहाँ हैं ? आजकल पतिदेव दिन

भर मेहनत करके घूम-फिर कर थके-माँदे शाम को घर आते हैं; लेकिन पत्नीजी को यह नहीं सूझती कि जरा उनके पैर दबा दे !" उन्होने कहा।

"वाह ! वाह ! कैसा सफेद झूठ बोल गए ? क्या मैं रोज आपके पाँव नहीं पलोटती हूँ ?" रामप्यारी ने पूछा।

"अरे भई ! मैं तुम्हारी बात नहीं कर रहा हूँ। तुम जैसी पतिव्रता तो आजकल इनी-गिनी हैं। भला अगर तुम रोज मेरा पाँव न दवातीं तो बताओ, मैं इतना लम्बा कैसे बन जाता ?" रामप्यारी के पतिदेव ने मजाक के तौर पर कहा। यह सुनते ही सुखवन्ती ने उनसे पूछा - "तो क्या आप ब्याह के पहले नाटे थे ?"

"हाँ, बहन ! मैं अपने ब्याह के पहले तुम्हारे पति से भी नाटा था। अब देखो न, तुम्हारी भावज ने मुझे कितना लम्बा बना दिया है ?" उन्होंने जवाब दिया।

भोली-भाली सुखवन्ती ने यह सब सच मान लिया। उसने नहीं सोचा कि ये मजाक में ऐसा कह रहे हैं। वह वहाँ से उठ कर घर गई तो देखा पतिदेव पलङ्ग पर खर्राटे ले रहे हैं। उसने सोचा कि पाँव दबा कर वह



भी अपने पतिदेव को लम्बा बना सकती है। वह धीरे से जाकर पलङ्ग पर पैताने बैठ गई ।

रामप्यारी और उसके पति कुछ देर तक गपशप करके सोने के लिए जाने लगे तो उन्हें नाटे पण्डित के घर से जोर की चीख-पुकार सुनाई दी। वे चौंक कर दौड़े दौड़े बाहर आए । रामप्यारी के पति ने साहस करके नाटे पण्डित को पुकार कर कहा-"यह आज कैसी सूझी ? क्यों उस बेचारी को पीट रहे हो ?"

तब नाटे पण्डित ने कहा -"यह मेरी स्त्री काहे की ? यह तो चुड़ैल है. चुड़ैल ! जरा मेरी आँख लग गई थी कि झट लगी मेरा गला घोंटने !"

रामप्यारी को यह सुन कर बड़ा अचरज हुआ और उसने सुम्बवन्ती से पूछा -"सच बताओ, क्या मामला है ?"

तब उसने रोते हुए कहा- "मैं पतिव्रता हूँ। मैं क्यों अपने पति को मारने चलूँगी ! जरा सा गला दबाने लगी; इसी के लिए इन्होंने इतना हो-हल्ला मचा दिया।"

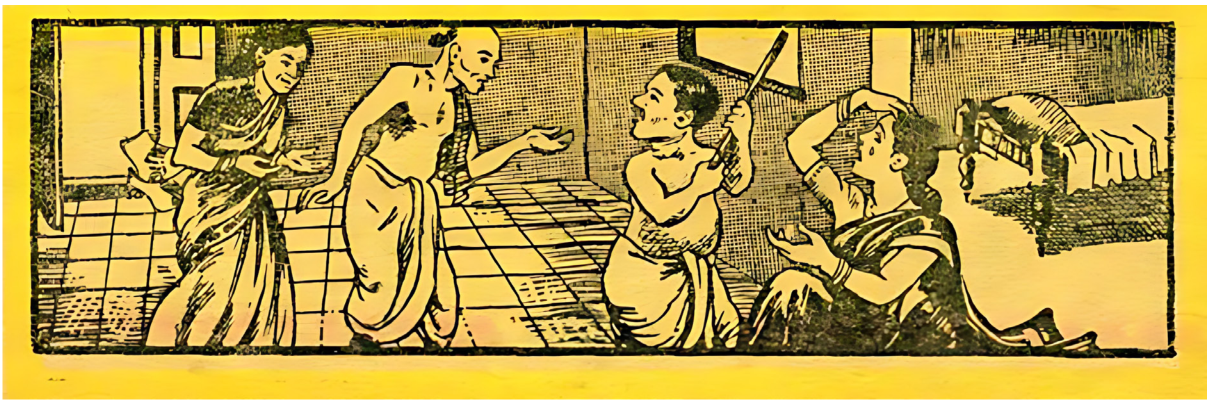
"यह गला दबाना क्या बला है ?" रामप्यारी ने पूछा।

"क्या आपने अपने पति के पाँव दबा कर उन्हें लम्बा नहीं बना दिया ! उसी तरह मैं भी उनके पाँव दबाने चली...." सुखवन्ती यह कह रही थी कि रामप्यारी के पति ने बीच में टोक कर पूछा-"पाँव दबाने वाली फिर गला कैसे दबाने लगीं ?"

"पहले तो पाँव ही दबाना चाहती थी। लेकिन इतने में उनके गले पर मेरी नजर पड़ गई। मैंने सोचा, पैरों से गला ज्यादा मुलायम होता है। इसलिए गला जल्दी लम्बा हो सकता है। इसके अलावा गला पवित्र भी होता है। एक पतित्रता के लिए पतिदेव के पाँव दबाने की अपेक्षा गला दबाना ही उचित है।" सुखवन्ती ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

तब रामप्यारी के पति को मालूम हो गया कि इस बेचारी ने उसकी मजाक की बातों पर पूरी तरह विश्वास कर लिया। उसके भोलेपन पर हँसी भी आई और तरस भी।

नाटे पण्डित को अब सब कुछ समझ में आ गया। उसने कहा-"तो बात यह है ? कैसी बेवकूफ है यह ? और शाम को रस्से वगैरह देख कर मैंने समझा कि यह मुझे फाँसी देने चली है।" उसने साँझ का किस्सा कह सुनाया। अब रामप्यारी बहुत अफसोस करने लगी कि उसके उपदेशों का यह फल हुआ। उन्होंने बहुत कोशिश करके नाटे पण्डित को समझा दिया कि उनकी स्त्री की नीयत बहुत अच्छी थी। उसके भोलेपन के कारण ही ऐसा हुआ। इसमें उसका कोई दोष नहीं।





लोग कहते हैं कि एक देश में एक गरीब आदमी रहता था। उसके तीन बेटे थे। एक रात तीनों लड़कों ने एक साथ विचित्र सपने देखे। सवेरे उठ कर जब उन्होंने यह बात अपने पिता से कही तो उसने कहा-"बच्चो ! सपनों की बात मुझे ठीक-ठीक बता दो जिससे मैं, उनका फल सोचूँ !"

यह सुन कर बड़े और मँझले ने अपने अपने सपने कह सुनाए।

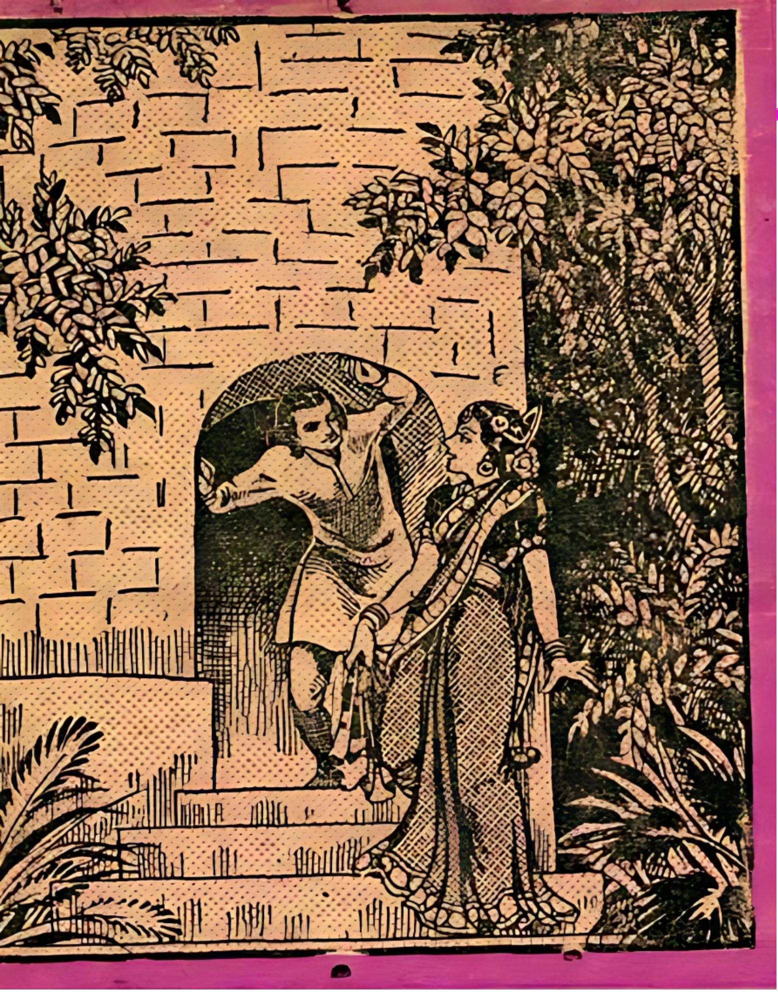
"ठीक है; ये सपने बुरे नहीं हैं। इनका फल अच्छा ही होगा।" पिता ने खुश होकर कहा।

लेकिन छोटे लड़के सुशील ने अपने सपने का हाल बताने से इनकार कर दिया। उसने कहा-"मैं अपने सपने का हाल किसी को नहीं बता सकता।"

पिता ने उसे बहुत समझाया; आखिर डराया धमकाया भी। लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। तब गुस्से में आकर उसके पिता ने एक छड़ी हाथ में ले ली और उसे पीटना शुरू किया। अब सुशील जोर-जोर से चिल्लाने लगा। रोते-रोते उसने सारा घर अपने सिर पर उठा लिया।

संयोग से उसी वक्त उस शहर का राजा उस राह से गुजर रहा था। सुशील की चिल्लाहट सुन कर वह अन्दर आया और उसके पिता से बोला-"अजी ! तुम पागल हो क्या ? बेचारे लड़के को क्यों इस तरह पीट रहे हो ?"

सुशील के पिता ने शान्त होकर सारा किस्सा कह सुनाया। तब राजा ने कहा- "अच्छा, लड़के को मेरे साथ भेज दो। मैं



लाड़-दुलार करके किसी न किसी तरह उसके सपने का हाल जान लूँगा।" यह कह कर उसने गरीब पिता को अशर्फियों की एक थैली दी और सुशील को घोड़े पर चढ़ा कर अपने साथ ले गया।

किले में जाकर राजा ने सुशील को बहुत प्यार से मीठी बातों में फुसला कर उसके सपने का समाचार जानना चाहा। लेकिन सुशील ने नाक पर मक्खी तक न बैठने दी। आखिर राजा ने बिगड़ कर सिपाहियों को बुलाया और कहा- "यह बेवकूफ नहीं जानता कि राजा का हुक्म टालने का क्या नतीजा होता है ? मैं इमे एक अच्छा पाठ पढ़ाना चाहता हूँ। जाओ, इसे ले जाकर जिन्दा ही दीवार में चुन दो !" तुरन्त सिपाही उसे बाँध ले गए।

लेकिन राजा की इकलौती बेटी ने सुशील को देख लिया था। वह समझ गई थी कि यह कोई मामूली लड़का नहीं है। आगे चल कर यह जरूर प्रतापी होगा। राजा ने गुस्से में आकर उसे बेवकूफ समझ लिया और मरवा डालने का हुक्म दिया। लेकिन राजकुमारी ने निश्चय कर लिया कि वह बेवकूफ नहीं है । सपने को सबसे छिपाने का जरूर कोई न कोई कारण होगा। इसलिए उसने उसे मौत के मुँह से बचाने का सङ्कल्प किया। उसने चुप्चाप राजगीरों को बुलवाया और उन्हें हुक्म दिया कि दीवार खोखली बनाओ और उसमें एक चोर दरवाजा भी छोड़ो।

राजगीरों ने राजकुमारी की आज्ञा का पालन किया। इसलिए दीवार में चुन दिए जाने पर भी सुशील पर कोई खतरा न आया। राजकुमारी ने सबकी आँख बचा कर उससे मुलाकात की और उसके खाने-पीने

का इन्तजाम भी कर दिया। इस तरह सुशील उस दीवार में मौज से रहने लगा।

कुछ दिन बाद पड़ोस के एक राजा ने एक भारी फौज के साथ उस शहर पर चढ़ाई कर दी और राजा के पास खबर भेजी -"मैं तुम से कुछ सवाल करूँगा। या तो तुम उनका ठीक ठीक जवाब दो या अपनी हार कबूल कर लो!"

तब राजा ने सवालों का जवाब देना मञ्जूर किया और पूछा-"अच्छा ! बोलो तुम्हारा पहला सवाल क्या है ?"

तब पड़ोसी राजा ने उसे अपने अस्तबल में ले जाकर पाँच घोड़े दिखाए और पूछा-"बताओ, पाँचों में उम्र में कौन बड़ा है ?"

तब राजा ने उससे कुछ मोहलत माँगी और घर जाकर सोचने लगा।

राजकुमारी को भी यह सारा मामला मालूम हो गया। उस दिन उसने सुशील के पास जाकर उस सवाल का जवाब पूछा । तब सशील ने कहा-"इसके लिए इतना सोचने की जरूरत क्या है ? इसका जवाब तो बहुत आसान है। देखो -पाँच बाल्टियों में पाँच साल की फसल का अनाज रखवा दो। यह याद रख लो



कि किस बाल्टी में किस साल की फसल का अनाज है। तब घोड़ों को बाल्टियों के पास छोड़ दो। सबसे बड़ा घोड़ा सबसे पहले साल की फसल का दाना खाने जाएगा। सबसे छोटा घोड़ा पाँचवें साल का दाना खाने आएगा। इस तरह तुम जान जाओगी कि किस घोड़े कौन बड़ा है !"

तब राजकुमारी ने यह उपाय अपने पिता को जाकर बता दिया। यह सुनते ही राजा खुशी से उछल पड़ा और उसका सारा सोच दूर हो गया। दूसरे दिन वह गर्व से सर उठाए पड़ोसी राजा के पास गया और उसके



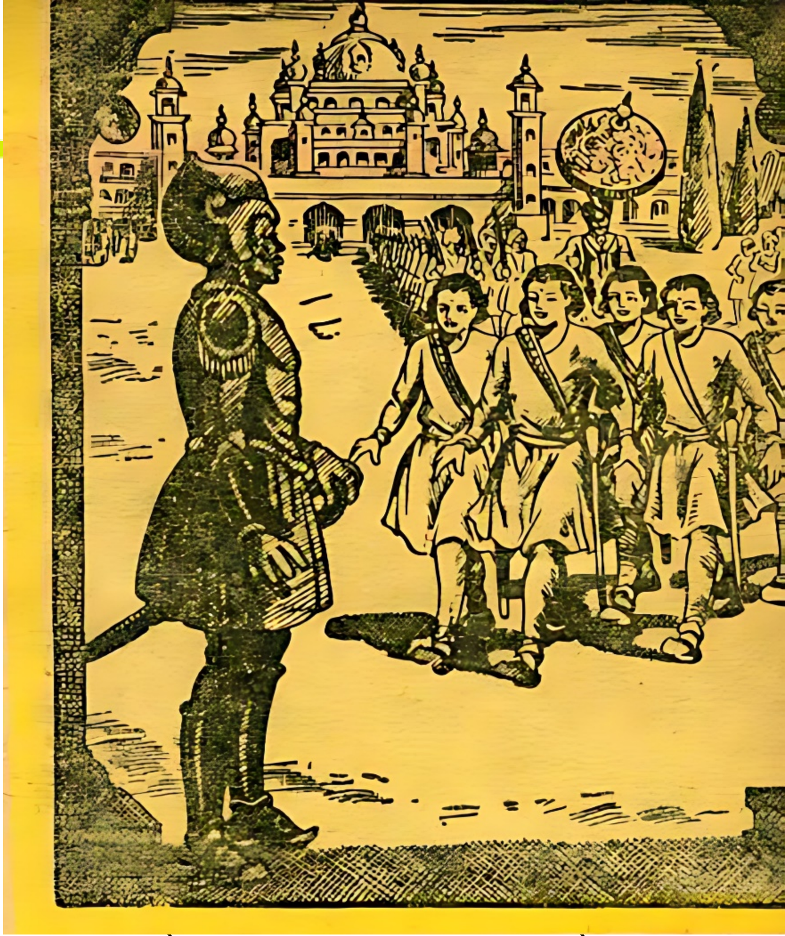
सवाल का जवाब दे दिया। जवाब ठीक था। इसलिए पड़ोसी राजा उसका कुछ न बिगाड़ सका। लेकिन उसका इरादा था इस का राज छीनना। इसलिए उसने दूसरा सवाल किया- "मेरे पास एक लकड़ी का तना है। तुम्हें बतलाना होगा कि उसकी जड़ किधर और सिरा किधर है ?" यह कह कर उसने वह लकड़ी का तना दिखला दिया जिसके दोनों छोर एक ही से लगते थे। राजा उदास मन से फिर घर लौट आया।

तब राजकुमारी फिर उस शाम को सुशील के पास गई। तब सुशील ने बतलाया- "तना देखने में दोनों ओर से एक सा लगता है। फिर भी उसके बीचों-बीच एक रस्सी बाँध कर उसे लटकाया जाए तो एक छोर जरूर नीचे झुक जाएगा। वही जड़ वाला छोर है।"

तुरन्त राजकुमारी ने घर जाकर अपने पिता से यह कह दिया। दूसरे दिन राजा ने पड़ोसी राजा के पास जाकर उसके दूसरे सवाल का जवाब भी दे दिया। इस पर

पड़ोस के राजा ने कहा- 'मेरा और एक सवाल है। अगर उसका भी जवाब दोगे तो मैं घर लौट जाऊँगा।" यह कह कर उसने किले की दीवार पर मन्त्र पढ़ कर एक तीर निशाना लगा कर मारा। तुरन्त भयङ्कर शब्द के साथ किले की दीवार एक बार बुनियाद से हिल उठी। तीर दीवार में घुस गया। तब पड़ोसी रजा ने कहा- "तीर को बाहर निकाल लाओ। नहीं तो मैं समझ लूँगा कि तुम हार गए।"

अब उस शहर के राजा ने सोचा कि इस बार जरूर उसका काम तमाम हो हो जाएगा। उसने घबरा कर तुरन्त राज्य-भर में ढिँढोरा पिटवा दिया कि जो उस तीर को दीवार से बाहर निकालेगा उसे मैं आधा राज देकर अपनी बेटी के साथ उसका व्याह



भी कर दूँगा। यह सुन कर बहुत लोग अपना भाग्य आजमाने आए। लेकिन सब निराश होकर लौट गए। वह तीर जादू के बल से दीवार में चिपक गया था। यह देख कर राजा फिर निराश हो गया।

शाम होते ही राजकुमारी फिर सुशील के पास पहुँची और सारी कहानी कह सुनाई। सुशील ने धीरज देकर उसके कान में कुछ कह दिया। दूसरे दिन सवेरा होते ही राजकुमारी पिता के पास गई और बोली-"पिताजी ! रात को मैंने एक सपना देखा है। उस सपने में एक देवी ने मुझसे कहा कि तुमने सुशील को जिस दीवार में चुनवा दिया था, उसमें एक वीर पुरुष रहता है। बही उस तीर को दीवार से निकाल सकता है।"

राजा तो सुशील की बात भूल ही गया था। उसने सिपाहियों से कहा- "उस दीवार को ढाह दो।" दीवार गिराते ही उसमें से सचमुच ही एक वीर पुरुष निकला। वह सीधे किले की दीवार के पास पहुँचा और एक मन्त्र पढ़ कर बड़ी आसानी से तीर निकाल लिया। दूसरे दिन पड़ोस के राजा को जब यह मालूम हुआ तो वह अपना सा मुँह लेकर लौट गया। लेकिन उसने जान लिया कि दुश्मन के दरबार में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी बुद्धि-कुशलता और वीरता के कारण उसकी कोई चाल चलने न पाई । इसलिए उसने राजा के पास खबर भेजी-"हमने सुना है कि आपके दरबार में कोई वीर पुरुष है। हम उसे देखना चाहते हैं। इसलिए आप उसे एक बार हमारे दरबार में भेजिए।"

राजा ने मञ्जूर कर लिया। लेकिन सुशील ने मन ही मन सोचा कि यह भी जरूर पड़ोसी राजा की कोई चाल है। इसलिए उसने

कुछ बहादुरों को अपनी ही जैसी पोशाक पहना दी और उन्हें भी अपने साथ ले लिया। जब वह उन सबको साथ लेकर पड़ोसी राजा के दरबार में गया तो उसके लिए उसे पहचानना मुश्किल हो गया। उसने सुशील को पहचानने की बहुत कोशिश की। पर उसकी सारी कोशिश बेकार गई। आखिर उसने बहुत प्रेम से कहा-"तुम लोगों में कौन वह वीर है जिसकी वीरता की बहुत सी बातें मैंने सुनी हैं? मैं उस वीर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आगे आए और मेरे हाथों पुरस्कार ले जाए !" यह सुनते ही सुशील उठा और राजा के आगे खड़ा हो गया। राजा की नीयत तो बुरी थी ही। उसने झट सिपाहियों से उसे पकड़ने का हुक्म दिया। लेकिन इसके पहले ही बीसों जवानों ने अपनी तलवारें निकाल ली थीं। सुशील ने भी अपनी तलवार निकाल कर राजा पर ऐसा वार किया कि तुरन्त उसका सर धड़ से जुदा होकर नीचे गिर पड़ा। सुशील ने उसे अपनी तलवार की नोक पर चुभा लिया और अपने वीर साथियों के साथ लड़ना-भिड़ता वहाँ से निकल भागा। दरबारियों को भी अपने राजा से ज्यादा प्रेम न था। इसलिए उन्होंने हार मान ली।

दूसरे दिन सुशील ने राजा को उसके दुश्मन की मौत का हाल बताया और सिर भी दिखा दिया। तब राजा ने उसकी चतुरता और वीरता की बहुत प्रशंसा की। इस पर राजकुमारी ने सुशील का सच्चा हाल पिता को सुना दिया। राजा बहुत चकित हो गया। उसने अपने वचन के अनुसार उसे अपना आधा राज दे दिया और अपनी बेटी से उसका ब्याह कर दिया। सुशील राजकुमारी के साथ सुख से दिन बिताने लगा।





पुराने जमाने में सुधान और चित्रकेतु नामक दो भाई रहते थे। एक बार वे यात्रा करने निकले। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्हें एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ दिखाई दिया। वहाँ से रास्ता दो तरफ जाता था। दोनों ने अलग हो जाने का निश्चय कर लिया। चलते समय उन्होंने यह भी तय लिया कि लौट कर वे इसी बरगद के फिर मिलेंगे।

सुधाम के साथ दो कुत्ते भी थे। कई घने जङ्गल पार कर वह एक ऊँचे पहाड़ के पास पहुँचा। उस पहाड़ पर चढ़ने पर उसे कई मट्टी की हाँड़ियाँ औंधी दिखाई दीं।

उसने एक हाँड़ी उठा कर देखी। लेकिन उसके नीचे कुछ नहीं था। उसने उसको फिर उसी तरह औंध देना चाहा। लेकिन औंधने के पहले ही वह फूट गई। इस तरह उसने कई हॉड़ियाँ उठाई और औधते समय सब की सब फूटती गईं। सुधाम ने सबसे आखिरी हाँड़ी उठाई।

उसमें से एक अजीब आदमी उठ खड़ा हुआ । उसका सारा शरीर देखने में आदमी सा लगता था। पर दाहिना पाँव पेड़ के तने जैसा था। उस आदमी ने सुधाम को देख कर क्रोध से कहा- "अरे दुष्ट ! ये हाँड़ियाँ मैंने बहुत मेहनत करके बनाई थीं। लेकिन तूने एक-एक करके सबको फोड़ दिया । इन हाँड़ियों को बनाने के काम आने वाली मिट्टी यहाँ से दस कोस की दूरी पर "नील-सरोवर" के सिवा और कहीं नहीं मिलती। इसलिए तू अभी मुझे अपने कन्धों पर चढ़ा कर वहाँ तक ले चल! यही तेरी सजा है !" वह आदमी गरजा।

नरेन्द्र शर्मा



सुधाम जरा भी न डरा । लेकिन उसने सोचा -"इस विचित्र मनुष्य के पैर में कुछ न कुछ रहस्य जरूर छिपा हुआ है। इसलिए इससे झगड़ा करना ठीक नहीं।" यह सोच कर बड़े नम्र स्वर में उसने कहा-"भाई ! ऐसी हाँड़ियाँ तो मैंने अपने देश में कभी नहीं देखीं थीं। इसलिए उठा-उठा कर देख रहा था। कसूर मेरा है। हुक्म दो, मैं जाकर नील-सरोवर से मिट्टी ले आता हूँ। तुमको कष्ट करने की क्या जरूरत है ?" उसने उस विचित्र मनुष्य को वहीं एक पेड़ की छाँह में बैठा दिया और वहाँ से चल दिया।

थोड़ी दूर जाने के बाद सुधाम अपने कुत्तों के साथ पहाड़ की एक कन्दरा में छिप गया। लेकिन वह जानता था कि वह अजीब आदमी जरूर उसे खोजता आएगा। इसलिए वह अपने धनुष-बाण निकाल कर तैयार बैठा था।

दूसरे दिन पहाड़ के नीचे से मेघ की सी गड़गड़ाहट होने लगी। थोड़ी ही देर में नीचे से विचित्र मनुष्य की आवाज आई। सुधाम ने तुरन्त दोनों कुत्तों को ललकार कर उस पर छोड़ दिया। दोनों भयङ्कर कुत्ते पलक झपकते पहाड़ से उतरे और उस विचित्र मनुष्य पर टूट पड़े। उसी समय सुधाम ने गुफा से बाहर आकर धनुष पर तीर चढ़ाया और उस पर निशाना लगा कर मारना शुरू किया। वह अजीब आदमी कुत्तों के कारण पहाड़ पर नहीं चढ़ पाता था। भागने की गुञ्जाइश भी न थी। वह छटपटा कर नीचे गिर कर मर गया। कुत्तों ने थोड़ी ही देर में उसका सारा बदन चबा कर खा डाला। लेकिन उसका पैर जो पेड़ के तने सा था, उनसे चबाया

न जा सका। इसलिए वह वैसे ही रह गया।

तब सुधाम खुशी खुशी पहाड़ से उतर आया। उसे शक तो था ही कि इस पेड़ के तने में जरूर कुछ न कुछ रहस्य छिपा हुआ है। उसने एक कुल्हाड़ी लेकर उसको चीर डाला।

तुरन्त उस पेड़ के तने में से सैकड़ों गौएँ बाहर निकल आईं। उन सब को देख कर वह चकित हो गया। उन में एक कपिला गौ थी जो सबसे सुन्दर थी। उसे देख कर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

वह गाय पूँछ हिलाती हुई सुधाम के पास आई और अपनी भोली आँखें उठा कर उसकी तरफ ताकने लगी। सुधाम उस पर मुग्ध हो गया।

शीघ्र ही सुधाम अपने भाग्य पर इतराता हुआ, गायों को हाँक कर घर लौट चला। चलते चलते वह दोराहे वाले बरगद के नीचे जा पहुँचा। उसका भाई चित्रकेतु पहले ही वहाँ पहुँच गया था और बैठा बैठा उसकी राह देख रहा था। चित्रकेतु ने



गायों के झुण्ड को देखा। उसकी नज़र कपिला गाय पर पड़ी। वह उसे हड़प लेने का उपाय सोचने लगा।

दोनों भाई थोड़ी देर तक बरगद के नीचे बैठ कर गप-शप करते रहे। दोनों बहुत थके हुए थे। सुधाम को थोड़ी ही देर में नींद आ गई। वह वहीं लेट गया और जल्द ही खर्राटे लेने लगा । लेकिन चित्रकेतु की आँखें न झपकीं। बरगद की बगल में ही एक कुँआ था। चित्र केतु को शैतानी सूझी। सुधाम को उठा कर उसने कुँए में डाल दिया और गायों को अपने घर ले चला।

सभी गाएँ उसके साथ चलने लगीं। लेकिन कपिला गाय बहुत कोशिश करने पर वहाँ से न टली । चित्रकेतु ने उसे मारा-पीटा भी। पर वह टस से मस न हुई। उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे और वह करुण स्वर से रम्भा रही थी ।

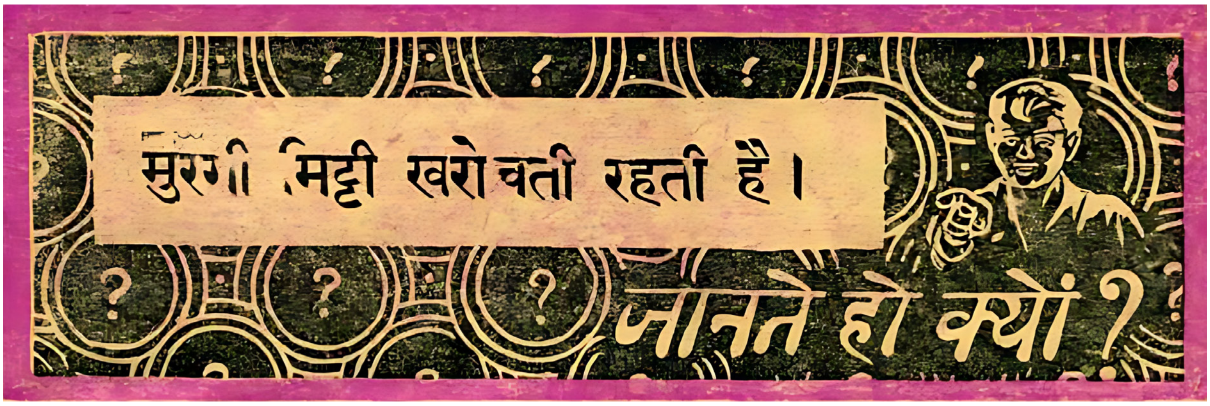
चित्रकेतु को अकेले घर लौटते देख पड़ोसियों ने उसे घेर लिया और सवालों की झड़ी लगा दी। वे उसके भाई के बारे में जानना चाहते थे। लेकिन चित्रकेतु ने कई बहाने बना कर सच्ची बात छिपा दी।

दूसरे दिन चित्रकेतु ने नौकरों को बुला कर कहा -"जाओ, बरगद के पेड़ के पास एक गाय छूट गई है। उसे हाँक लाओ !" नौकरों ने जाकर कपिला गाय के गले में रस्सी बाँधी और जबर्दस्ती घसीटने लगे।

लेकिन गाय उन्हें खींच-खाँच कर कुँए पर ले गई। नौकरों ने कुँए में झाँका और सुधाम को देखा। उन्होंने तुरन्त उसे ऊपर निकाल लिया। सुधाम नौकरों और कपिला गाय को साथ लेकर घर की ओर चला। उसके आने की खबर पाते ही चित्रकेतु घर से भाग गया। गाँव वाले सभी उसको कोसने लगे। लेकिन सुधाम ने नौकरों को भेज कर उसे पकड़ मँगवाया । थर थर काँपता चित्रकेतु अपने भाई के सामने आ खड़ा हुआ । सुधाम ने उसे कुछ नहीं कहा। उलटे बड़े प्रेम से गले लगा कर बोला- 'भाई ! तुम अगर माँगते तो मैं अकेली कपिला ही क्यों- सारी गौएँ तुझे दे देता ! इतनी सी बात के लिए तुमने ऐसा अनर्थ क्यों किया ?"

भाई की बातें सुनते ही चित्रकेतु की आँखों से आँसू की धार बह निकली। वह भाई के पैरों पर पड़ गया और क्षमा माँगने लगा। सुधाम ने चित्रकेतु को उठा कर छाती से लगा लिया।





एक ऐसा समय था जब गिद्ध के पंख नहीं होते थे। इसलिए वह उड़ नहीं सकता था। उसे जानवरों के साथ साथ जमीन पर चल-फिर कर चारे की खोज करनी पड़ती। ऐसा करने में उसको बड़ी मुसीबत उठानी पड़ती थी।

तब गिद्ध ने भारी तप किया। तप से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हुए। भगवान को देखते ही उसने हाथ जोड़ कर कहा-"देव ! मुझे जमीन पर चलना पड़ता है। इससे मुझको बहुत कष्ट उठाना होता है। इसलिए कोई ऐसा उपाय बता दीजिए जिससे मैं आसमान में उड़ सकूँ। मुझे भी पंख मिल जाएँ तो बड़ी कृपा हो !" उसने विनती की।

गिद्ध की प्रार्थना सुन कर ईश्वर ने उसे एक जादू की सुई दी और कहा-"'गिद्धराज! जाओ, मनचाहे पर चुन लाओ और उन्हें इस सुई से सीकर अपने शरीर में लगा लो! पंख सदा के लिए चिपक जाएँगे। तब तुम भी दूसरे पञ्छियों की तरह आसमान में उड़ने लगोगे।" यह वर देकर भगवान अन्तर्धान हो गए।

जादू की सुई की मदद से गिद्ध ने पंख तैयार कर लिए। अब वह भी आसमान में मन-माना विहार करने लगा। गिद्ध को इस तरह हवा में उड़ते देख कर उसकी सहेली मुरगी को भी आसमान में उड़ने की इच्छा हुई। उसने गिद्ध के पास जाकर अपनी अभिलाषा प्रकट कर दी।

उसकी बात सुन कर गिद्ध ने कहा- "मुरगी रानी ! मैंने बहुत दिन तक कड़ी तपस्या करके यह जादू की सुई पाई है।

इसलिए यह सुई मैं किसी को नहीं दे सकता। इसके सिवा जो चाहो माँगो! खुशी से दे दूँगा।"

मुरगी ने गिड़गिड़ा कर कहा-"इसके सिवा मेरी और कोई ख्वाहिश नहीं। इसलिए अगर तुम्हें दया हो तो मेरी इच्छा पूरी करो। बड़ी आस लगा कर आई हूँ। तुम्हारे आगे हाथ पसारती हूँ। सिर्फ चार दिन के लिए वह सुई दे दो ! काम पूरा होते ही मैं उसे सावधानी से तुम्हें लौटा दूँगी।" गिद्ध "नहीं" न कर सका। उसने सुई दे दी और बार बार चेता दिया कि कहीं खो न दो ! मुरगी सुई लेकर बड़ी खुशी से फुदकती चली। लेकिन खुशी के जोश में सुई कहीं गिर गई। बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिली। मुरगी बावली हो गई । गिद्ध के पूछने पर वह क्या जवाब देगी ?

चार पाँच दिन बाद गिद्ध ने अपनी सुई माँग भेजी। मुरगी कोई बहाना कर गई। गिद्ध ने कई बार उससे सुई माँगी । लेकिन वह रोज नए नए बहाने बनाती गई। बेचारी दिन भर जमीन कुरेदती रहती कि शायद सुई कहीं मिल जाए। लेकिन कहीं न मिली। उसका ढूँढ़ना आज भी बन्द नहीं हुआ है। गिद्ध समझ गया कि मुरगी उसकी सुई हड़प बैठी है और उसके साथ चालबाजी कर रही है।

यह सोच कर वह दोस्ती छोड़ कर उसका दुश्मन हो गया। तब से वह मुरगी और उसके बच्चों को देखते ही उन्हें झपट ले जाने की कोशिश करता है और इस तरह उसके वंश का नाश करके अपना बदला चुकाता है। और देखो-शरम की मारी मुरगी आज भी जमीन कुरेद-कुरेद कर सुई ढूँढ़ती रहती है !



CHANDAMAMA (Hindi) DEC. 1950 Regd. No. M. 5452



चंचल मीन